टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

फरवरी 2024 वर्ष 28, अंक 2 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2080 ❑ कुल पृष्ठ 08
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

बसन्त पंचमी बलिदान दिवस- धर्मवीर हकीकत राय

❑ दिनेश कुमार

भावी सन्तानों में आर्य चेतना, धर्म-अनुराग, आत्म-गौरव एवम् सच्ची राष्ट्रीय भक्ति उत्पन्न करने में भारत के महान पुरूषों की जीवनियां जो कार्य कर सकती हैं अन्य कोई साधन नहीं कर सकता। धर्म पर मर मिटने के लिए तो बहुत हुए परन्तु धर्म के खातिर मर कर भी जीवित रहा तो वह 14 वर्षीय धर्मवीर हकीकत राय का अमर बलिदान। पंजाब की पावन धरती पर सन् 1719 के दिन भागमल खत्री के घर जननी माता कौरां की पवित्र कुक्षि से तेजस्वी वीर बालक (हकीकत) का जन्म हुआ। उस समय मुगलों का शासन था तथा उस समय राज्यों की वास्तविक बागडोर सूबेदारों तथा नवाबों के हाथ में थी। तलवार के बल पर मृत्यु का भय दिखलाकर बलात् हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन किया जाता था। अन्याय तथा अत्याचार का बोलबाला था तथा हिन्दु जनता इन अत्याचारों से थरथर कांप रही थी। निर्दोषों के गले नित्य नये उगते सूर्य के साथ काटे जा रहे थे। ऐसी भयंकर बेला में पंजाब के 14 वर्षीय निडर बालक वीर हकीकत राय अत्याचार के विरूद्ध सीना तान कर खड़ा हुआ।

उस समय मुसलमानों का शासन होने के कारण फारसी राज्य की भाषा थी तथा माता-पिता ने उसका नाम हकीकत राय रख दिया। हकीकत का अर्थ सच्चाई होता है और ऐसा प्रतीत होता है कि होनहार बालक भी माता के गर्भ से सच्चाई की भावना लेकर पैदा हुआ। इकलौती संतान होने के कारण माता-पिता ने पुत्र को बड़े लाड-प्यार से पाला। बचपन से ही महान् मेधावी तथा प्रतिभाशाली बालक था। सरकारी भाषा फारसी होने के कारण फारसी का जानना आवश्यक था। इस विचार से माता-पिता ने फारसी की शिक्षा के लिए उसे मकतब (विद्यालय) में मौलवी साहिब के पास भेजा। प्रतिभाशाली होने के कारण थोड़े ही समय में अपने सहपाठियों से पढ़ाई में आगे निकल गया और परीक्षा में सर्वप्रथम रहकर ईनाम भी प्राप्त करता था। जिस कारण सहपाठी उससे ईर्ष्या करते थे एक दिन मौलवी साहिब ने एक मुसलमान विद्यार्थी को पाठ सुनाने के लिए कहा तो वह अपना पाठ न सुना सका। जिस पर मौलवी साहिब ने डांटते हुए कहा कि "तुझसे तो वह हिन्दु लड़का ही अच्छा है जो अपना पाठ सरलता से सुना देता है और तू मुसलमान होकर भी अपनी ही भाषा का पाठ नहीं सुना सकता।" अपमानजनक शब्द सुनकर वह विद्यार्थी पानी-पानी हो गया और उसने हकीकत से बदला लेने तथा तंग करने की योजना बनाई। मौलवी साहिब नमाज पढ़ने के लिए निकट की मस्जिद में चले गये और उनकी गैरहाजिरी में वह विद्यार्थी हकीकत राय को तंग करने लगे तथा भिन्न-भिन्न अभद्र व्यंग्य करने लगे। इस पर हकीकत राय बोला मित्रों तुम्हे मां भगवती का वास्ता मुझे मत तंग करो परन्तु उन्होंने भगवती का नाम सुनते ही भगवती को बुरा भला कहना शुरू कर दिया और साथ में हकीकत से मारपीट शुरू कर दी। दु:खी हकीकत ने कहा कि अगर यही शब्द मैं आपकी बीबी फातमा के प्रति कहूं तो क्या आपको दु:ख नहीं होगा? उन्होंने कहा कि तू कहकर तो देख। तो फिर क्या था मानो कयामत (प्रलय) आ गई तथा उन सभी लड़कों ने खूब नमक मिर्च लगाकर मौलवी साहिब को हकीकत की शिकायत की। हकीकत को इस आरोप में गिरफ्तार करवा दिया गया और मामला हाकिम मिर्जा अमीर बेग की अदालत में भेज दिया गया। सारा कुछ जानने के बाद और मौलवियों से सलाह मशवरा करने के बाद तथा छोटे बच्चे को देखते हुए हाकिम ने कहा अगर तू इस्लाम कबूल कर ले तो तेरी जान बख्शी जा सकती है। इस पर हकीकत बोला **मुझे है धर्म प्यारा, हंस के मैं बलिदान हो जाऊँ। धर्म बदलने से बेहतर है कि**

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

जीवन यात्रा

- *पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी*

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

हम किसी भी छोटी सी यात्रा पर निकलते हैं तो उसके लिए पहले पूरी योजना बनाते हैं कहाँ से कहाँ तक किस वाहन से यात्र करनी है, उसका पूर्व आरक्षण फिर समय से पूर्व पहुँच कर अपनी आरक्षित सीट पर जाकर बैठना, रास्ते में आवश्यकता अनुसार सारा सामान भोजन वस्त्रादि की पूर्व व्यवस्था करके चलते हैं। फिर जहाँ जाना है वहाँ रहने भोजन आदि की पूर्व व्यवस्था आरक्षण करवा कर चलते हैं। यह सारी तैयारी हम यात्रा की सफलता और लक्ष्य की प्राप्ति के उद्देश्य से करते हैं।

परन्तु कितनी आश्चर्यजनक बात है कि अपनी रोजमर्रा की इन छोटी-छोटी यात्राओं की इतनी तैयारी और मनुष्य जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण जीवन यात्रा के प्रति पूरी उदासीनता। छोटी सी यात्रा का लक्ष्य, मार्ग, मार्ग के वाहनों, भोजन, वस्त्र आदि की पूर्व व्यवस्था आरक्षण आदि ताकि कोई कष्ट ना हो लेकिन अपनी जीवन यात्रा के लक्ष्य का निर्धारण शायद ही हम में से किसी ने किया हो। अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर ईश्वरीय न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत ईश्वर प्रदत्त अनमोल तन मनुष्य जीवन पाकर भी हम इसका उपयोग सही प्रकार से नहीं कर पा रहे हैं। शरीर रूपी साधन का उपयोग हमें अपने लक्ष्य अर्थात जन्म जाल के बन्धनों से छूट कर मोक्ष की प्राप्ति के लिए करना चाहिए। परन्तु हम अबोध शायद अपने अस्तित्व से भी अनभिज्ञ इन साधनों अर्थात् मानव तन मे उपलब्ध मन, बुद्धि, ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों को अपने आधीन रखने के स्थान पर शायद भौतिक शारीरिक सुख सुविधाओं की चकाचौंध में सम्मोहित इन साधनों के अधीन होकर अपना मानव जीवन व्यर्थ गंवा रहे हैं।

हमारी स्थिति शराब पीकर अपनी सुध-बुध खोकर वाहन चला रहे चालक की भाँति है जो गति के रोमांच के वशीभूत उस वाहन को अपने आधीन रखने के स्थान पर वाहन अधीन होकर दुर्घटना कर बैठता है और इस गति के रोमांच मे जीवन समाप्त कर लेता है। ठीक इसी प्रकार हम भी इस तथाकथित विकास के नाम पर भौतिक सुख सुविधाओं को इकट्ठा करने की अन्तहीन सी चाह में मन के वश में आकर अपने लक्ष्य से भटक कर बड़ी तीव्र गति से जीवन यात्रा कर रहे हैं। ईश्वर ने यह अनमोल मानव तन हमारे उपयोग के लिए दिया था परन्तु हम शायद इसके ठीक विपरीत इसका उपयोग अपने जीवन के लक्ष्य अर्थात मोक्ष की प्राप्ति न करके तथाकथित विकास की चकाचौंध मे सम्मोहित अपने विनाश की ओर बड़ी तीव्र गति से अग्रसर हैं।

हम कैसे अबोध हैं कि हम अपनी इतनी महत्वपूर्ण जीवन यात्रा में लक्ष्य के विपरीत दिशा में दौड़े चले जा रहे हैं। शायद हमें अपने लक्ष्य का कोई ज्ञान नहीं और यही अज्ञानता अबोधता हमारे दु:खों का कारण है। छोटी सी बस यात्रा करते समय तो पूरी तैयारी लक्ष्य का निर्धारण पूर्व आरक्षण रास्ते की वस्त्र भोजनादि की व्यवस्था परन्तु जीवन यात्रा में साधनो को आधीन रखने के स्थान पर साधनों के आधीन होकर झूठे विकास की चकाचौंध से सम्मोहित विनाश की गहरी खाइयों की ओर बड़ी तीव्र गति से दौड़ रहे हैं इस अंधी दौड़ में कहीं पीछे ना छूट जायें इसलिए कहीं रुककर अपनी दिशा और दशा पर चिंतन करने की भी कोई सम्भावना प्रतीत नहीं होती।

अब अन्त में यह प्रश्न उठता है कि हमारी जीवन यात्रा का लक्ष्य क्या हो उस लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग क्या हो बस मार्ग पर कैसे चलें और लक्ष्य को प्राप्त करें। मनुष्य को जीवन यात्रा का लक्ष्य बिल्कुल साफ स्पष्ट मोक्ष की प्राप्ति जिससे हम अर्थात जीवात्मा आनन्दस्वरूप परमात्मा के परम आनन्द में अपनी आत्मा को मग्न कर सकें और जन्म जाल अर्थात लाख चौरासी के चक्कर से मुक्ति पा सकें। अब प्रश्न है कि इस उद्देश्य की प्राप्ति का साधन क्या हो तो ईश्वर प्रदत्त यह अनमोल मानव शरीर इसकी मन बुद्धि ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ इस लक्ष्य प्राप्ति का साधन है और हमें इन साधनों को विशेष रूप से अत्यन्त चंचल सर्वाधिक गतिशील मन को अपनी नियंत्रण में रखकर ईश्वर प्राप्ति अर्थात उसकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना में लगाना है। अब जब लक्ष्य और साधन स्पष्ट हैं तो लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग क्या हो तो यह मार्ग है अपने साधनों के अपने नियंत्रण मे रखकर आत्मा की उन्नति के लिए सद्कर्म परोपकार के यज्ञीय कार्य करते हुए अपने जीवन को यज्ञमय बना लेना। और निश्चित रूप से ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में अन्तत: हमें हमारे सद्कर्मों निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञीय कार्यों का फल हमारे लक्ष्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध होता है। हम सभी अपनी जीवन यात्रा के लक्ष्य को पहचानें और उसकी प्राप्ति का प्रयास करें।

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ अनऔचपारिक बैठक में चर्चा के कुछ अंश

आवश्यक सूचना

आपका लोकप्रिय आर्य मर्यादाओं का समाचार पत्र ''टंकारा समाचार'' इंटरनेट एवम् वट्सअप पर उपलब्ध। सभी सदस्य पाठकों से अनुरोध है कि अपना ई-मेल पता एवम् वट्सअप मोबाइल नम्बर **9560688950** पर **सदस्य संख्या एवम् नाम सहित** भेजे ताकि हम पंजीकृत कर सके जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

- ट्रस्ट मन्त्री एवम् सम्पादक

क्या तीर्थ यात्रा का कोई महत्व है आज...?

लेख में इस शंका का समाधान करने का प्रयत्न किया है इसलिए पत्र के रूप में यह विचार हर उस पुत्री के लिए है जो धर्म में थोड़ी भी रूचि रखती हो ताकि उसे सत्यज्ञान हो सके।

मेरा इस पत्र का विषय है तीर्थ स्थान और तीर्थ यात्रा। तीर्थ यात्रा के लिए लोग घर से चलते थे ग्रुप बना कर और अच्छी धार्मिक सोसाइटी को साथ लेकर, धर्म में प्यार रखने वाले लोगों को साथ लेकर। रास्ते में धार्मिक विषयों पर बात होती थी। भजन गाते जाते थे। एक दूसरे के विचारों का आदान-प्रदान होता था। यातायात के साधन न थे। कुछ लोग जिनकी आर्थिक व्यवस्था अच्छी नहीं थी वे पैदल जाते थे। कुछ लोग बैलगाड़ियों पर और कुछ रेलगाड़ी पर। एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखते थे। एक-दूसरे को बहुत कुछ सिखाते थे। ऐसी तीर्थयात्रा का बहुत लाभ होता था। परन्तु आज कल लोग टैक्सियों में जाते हैं। कार में म्यूजिक लगा होता है, अश्लील संगीत चलता रहता है। परिवार के अपने ही सदस्य होते हैं, कभी धर्म चर्चा होती ही नहीं। धार्मिक विचारों का आदान-प्रदान तो दूर की बात है। यदि रास्ते में किसी स्थान पर बैठेंगे तो शराब निकाल कर पी लेंगे। नहीं तो कम से कम सिग्रेट तो जरूर ही कुछ लाभ नहीं ऐसी तीर्थ यात्रा का। इससे तो घर पर बैठना अधिक लाभदायक है।

तीर्थ स्थान पर कोई लाभ है या नहीं? था, परन्तु अब नहीं। हाँ लाभ हो सकता है। पहले चूंकि यातायात के साधन उपलब्ध न थे इसलिए घर से निकल पड़ते थे कि इस बहाने धर्म की चर्चा भी सुनेंगे और अपने देश को भी देखेंगे। वास्तव में यह भारतदर्शन था ताकि एक-दूसरे को मिलें। उत्तर वालों को पता लगे कि दक्षिण वाले लोग कैसे हैं, कैसा पहरावा हैं, कैसा खानपान है? और दक्षिण वालों को उत्तरवालों की जानकारी मिले। एक-दूसरे को मिलकर, जानकर समझ कर हम सब एकता में पिरोये जा सकते हैं। यह था उद्देश्य। किन्तु आजकल तो विज्ञान ने इतनी उन्नति की है कि मनुष्य प्रात: देहली में होता है तो सायं विलायत में। दो घण्टे काम किया और फिर वापिस। इस भाग दौड़ में क्या समझेंगे उन लोगों के बारे में। जिन्दगी तीव्र गति से चल रही है। किसी के पास समय ही नहीं। तीर्थ स्थानों पर गए न गए एक जैसा है। लोग तीर्थ मन्दिरों में जाते हैं मूर्ति के आगे माथा झुकाया और वापिस आ गए और मन में यह झूठी खुशी कि शायद इस स्थान पर आकर बहुत पुण्य कमा कर चले हैं। वास्तविक रूप से उद्देश्य था कि पहाड़ देखे जायं, वहां पर जाकर रहा जाए। वह मुनि और संन्यासी जो कन्दराओं और गुफाओं में रहते हैं, उनसे मिला जाये, उनसे धर्मशिक्षा प्राप्त की जाए। उनसे जीने का ढंग सीखा जाए। वह विद्वान् जो किसी दूसरे शहर, नगर, पहाड़ या तीर्थ स्थान पर रहते हैं उनको सुनकर जीवन को सफल बनाया जाए। जब तक इस बात को सम्मुख रखकर तीर्थ स्थान को नहीं जाया जाता तब तक कोई लाभ नहीं ऐसे स्थान पर जाने का। यदि इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है तो तीर्थ स्थान पर जाना सार्थक हो सकता है।

अब रही बात तीर्थ स्थान की। सुनो, जल से तो शरीर शुद्ध होता है, सत्याचरण से मन पवित्र होता है, तप करने से जीवात्मा और ज्ञान से बुद्धि पवित्र होती है। किसी स्थान से मन, बुद्धि या आत्मा पवित्र नहीं हो सकती। जैसे मान लो सन्ध्या उपासना यदि करनी है तो आवश्यक है कि स्नानादि करके बैठें। इसलिए स्नान की अति आवश्यकता है परन्तु यह नहीं कि स्नान कर लिया तो मानो कोई पुण्य कर लिया–**मन तो मलिन वैसा ही मूर्ख रहा, गंगा में रोज जा के नहाया तो क्या हुआ॥**

पुराने युग में जब लोग बाहर जाया करते थे तो किसी नदी के तट पर बैठ कर पहले स्नान करते थे, फिर उसी एकान्त स्थान पर बैठ कर प्रभु का भजन करते थे या किसी झरने पर स्नान करते थे और फिर प्रकृति की गोद में बैठकर प्रभु का ध्यान करते थे। ऐसे स्थान धीरे-धीरे तीर्थ स्थान कहलाने लग गए। परन्तु आजकल लोग ऐसे स्थानों पर जाते हैं, स्नान करते हैं, और वापिस आ जाते हैं कि हमने तीर्थ स्नान कर लिया, मानो कोई धार्मिक मोर्चा मार लिया।

सो बेटी, वास्तविकता को पहचानो। ईश्वर का स्मरण करो। चाहे घर पर बैठ कर चाहे मन्दिर में बैठ कर। पहाड़ की गुफा में बैठकर या नदी के तट पर बैठ कर। परन्तु ध्येय यही होना चाहिए कि हमने ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और पूजा करनी है। इतना ध्येय काफी नहीं कि हमने केवल उसी स्थान पर पहुंचना है या उस स्थान पर जा कर स्नान करके लौट आना है। हमने तो वहां जाकर ज्ञान के अनमोल मोती ढूंढ़ कर सब में बांटने हैं।

अजय टंकारावाला

आर्य विद्वानों से अनुरोध

इस वर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्मोत्सव के अवसर पर **''ज्ञान ज्योति पर्व''** 10 फरवरी 2024 से 12 फरवरी 2024 तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर **टंकारा समाचार** का विशेषांक **''स्मरणांक''** प्रकाशित किया जायेगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता दिनांक यथाशीघ्र भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग स्वास्थ्य आदि एवं अन्य जन उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हों।

ऐसा निर्णय किया है। प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पृष्ठों से अधिक न हो, तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल tankarasamachar@gmail.com पर ''वॉकमेन चाणक्य'' टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय टंकारावाला, सम्पादक, चलभाष नं. 9810035658

सम्पादकीय कार्यालय: आर्य समाज, सी-606, डिफेन्स कालोनी (गोल गुम्मद की ओर) नई दिल्ली-110024

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

❐❐❐

गौ-दान : महा-दान–उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

❐❐❐

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

❐❐❐

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

❐❐❐

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

❐❐❐

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

❐❐❐

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80 G के अन्तर्गत मान्य है। एवम् C.S.R. दान प्राप्त करने हेतु पंजीकृत।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **"श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा"** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 466500010000 1067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

–:निवेदक:–

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

वेद वाणी में विश्वशान्ति

❐ श्री देवनारायण भारद्वाज

यह सर्वमान्य तथ्य है कि संसार का प्रथम ग्रन्थ वेद है। वेदों में भी ऋग्वेद को सम्पूर्ण विश्व ऐसी मान्यता देता है। वेद वास्तव में वह अथाह सागर हैं जिनमें अतुल रत्न-राशि भरी पड़ी है। प्रश्न उनके मन्थन का है। वेदों में मानवीय व्यवहार के हर विषय का सविस्तार समावेश किया गया है। इसीलिए तो महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदों को ही सब सत्य विद्याओं का आधार मानते थे। वेदों में ईश्वर-उपासना, कर्मकाण्ड तथा मोक्ष के मार्ग का ही वर्णन नहीं है, अपितु उनमें साधारण जन के उपयोग की व्यावहारिक बातें भी प्रचुर मात्रा में हैं। जहा एक ओर कृषि, व्यवसाय, शिल्प और संगीत का ज्ञान मिलता है, वहाँ दूसरी ओर राष्ट्ररक्षा की ओर भी सचेत किया गया है। भारत के लिए यह राष्ट्र-रक्षा की समस्या ऐसी है, जिसके समाधान हेतु सदैव सजगता की आवश्यकता है। देखिए वेद भगवान् किस प्रकार हमें राष्ट्र-रक्षा की प्रभूत प्रेरणा देते हैं।

हे राष्ट्रपति! तू इस राष्ट्र के हित के लिए बहुत से शस्त्र-समूह को अपने वश में कर, बहुत से मनुष्यों को अपने अधीन शासित कर सेना बना और विद्वानों को सत्कार योग्य धन प्रदान कर। हजारों धनों और बलों को शासन में ला। शत्रु को पराजित करने वाले बल से तीव्रयान (शीघ्रगामी विमानों) से युक्त राष्ट्र-निवासी प्रजाजन को उन्नति की ओर ले जा व उत्तम पद प्रदान कर। तेरा शस्त्र-सेना-बल का संग्रह कार्य जैसा पहले किया है, आज भी वैसा ही राष्ट्र की शक्ति को बढ़ाने वाला है। (ऋग्वेद मं. 6.18.13)

इस मन्त्र में राष्ट्र-नायक को राष्ट्र की रक्षा हेतु सेना व शस्त्र-बल में निरन्तर रत रहने का निर्देश दिया गया है। एक और मन्त्र भी इसी प्रकार का स्पष्ट निर्देश देता है।

हे उत्तम विद्वान् वीर नायको! जिस प्रकार गौओं के सींग सबसे ऊंचा तथा उसके शरीर की शोभा के लिए भी होते हैं, उसी प्रकार आप लोगों का सबसे उत्तम, शत्रु को मारने वाला शस्त्रास्त्र बल भी प्रजा को रक्षा देने वाला तथा शोभा, लक्ष्मी को बढ़ाने वाला हो। प्रकाश और जल देने के लिए जिस प्रकार सूर्य ही सर्व प्रकाशक है, उसी प्रकार हे राष्ट्रनायको! प्रजा को विविध मार्गों में चलाने के लिए आप मार्गदर्शक हो, आप लोग वेगवान अश्वों के समान उत्तम सामर्थ्यवान, उत्तम भूमियों के स्वामी और उत्तम मार्ग में चलने वाले होवो। आप लोग राष्ट्र के ऐश्वर्य की वृद्धि के लिए सम्मान्य मनुष्यों की भाँति होवो, सदा सावधान रहो तथा पदाधिकार के मद में अपव्ययी और उपेक्षाकारी मत बनो। (ऋग्वेद मं. 5.59.3)

उपर्युक्त मन्त्र में सैन्य व शस्त्रबल को गाय के सींग की उपमा इसीलिए दी गई है कि वह सदैव ऊँचा रहने से राष्ट्र में श्रीवृद्धि करता है। साथ ही यह भी कहा गया है कि राष्ट्रनायकों को पदाधिकार का मद कदापि न होना चाहिए। राष्ट्र के धन का अपव्यय भी नहीं करना चाहिए। अगले मन्त्र में भी सेना के संयोजन पर बल दिया गया है।

राष्ट्र के वीर पुरुषो! रथों को धारण करने वाले धुरों में शीघ्रगामी अश्वों एवं शस्त्रवर्षणशील सेनाओं को संगठित करो। स्वर्ण या लौह धातु के कवचों को धारण करके समस्त स्पर्धाशील शत्रुओं को विशेष रूप से उखाड़ डालो। सन्मार्ग पर शोभापूर्वक जाने वाले रथ निरन्तर उन्नति की ओर बढ़े। (ऋग्वेद मं. 5.55.6)

इस मन्त्र में राष्ट्र की रक्षा के लिए शत्रुओं को समाप्त करने का निर्देश है साथ ही सन्मार्ग की प्रेरणा भी, जिससे कोई अन्याय न हो। अगला मन्त्र भी इस ध्येय की पूर्ति हेतु अविरल आगे बढ़ने का आग्रह करता है। बाधाओं को लांघकर लक्ष्य प्राप्त करने का सन्देश इस मन्त्र में संचित है।

विद्वान वीर पुरुषो! अपने सत्कार के लिए जहाँ तक जा सको, वहां तक अवश्य जाओ। पहाड़ भी न रोक सकें, नदियां भी न रोक सकें। आप लोग आकाश और भूमि दोनों स्थानों पर परिभ्रमण करो। उत्तम ध्येय से जाने वाले आप लोगों के रथयान व विमान आदि अनुकूल रूप से चला करें। (ऋग्वेद म. 5.55.7)

इस मन्त्र ने थल-जल और नभ तीनों मार्गों से आगे बढ़कर राष्ट्र-रक्षा के लिए सजग रहने का संकेत किया है। आगे आने वाला मन्त्र भी राष्ट्र-रक्षकों को सज्जित रहने का सन्देश देता है।

हे वीर पुरुषो! आप लोगों के कन्धों पर शत्रु-नाशक शस्त्रास्त्र सजें और पैरों में स्थिरतायुक्त जूते आदि हों, छातियों पर स्वर्ण के आभूषण समान कवच हों। रथों पर सुशोभित होकर अग्नि के समान कान्ति व प्रताप से युक्त होकर बाहुओं में विशेष चमकवाले शस्त्रास्त्र धारण करें और सिरों पर विविध प्रकार से मढ़ी व बुनी हुई स्वर्ण या लोहे की पगड़ियां हों। (ऋग्वेद म. 5.54.11)

उपरोक्त वेश-भूषा की युद्ध में ही आवश्यकता होती है। जो सेनाएं अपने साज-सामान से सदा सुसज्जित होती हैं वे सर्वदा विजयी होती हैं।

जो उदार हृदय, शस्त्रों से विशेष चमकने वाले, शस्त्रों में विद्युत का प्रयोग करने वाले विद्युत के विशेष ज्ञानी क्रान्तिदर्शी नाना पदार्थों को शिल्प द्वारा निर्माण करने में कुशल विद्वान होते हैं, उनसे लाभ लेने को उत्सुक जनो! उन वायु स्वभाव, बलशाली, अप्रमादी और ज्ञानी जनों को न्यायमुक्त वचनों के सम्मानित और आनन्दित करो। (ऋग्वेद मं. 5.52.13)

उपर्युक्त मन्त्र में राष्ट्र-रक्षा के निमित्त विद्युत के यन्त्र बनाने वाले वैज्ञानिकों के प्रोत्साहन की बात है। राष्ट्र को ऐसे वैज्ञानिकों का सदैव सम्मान करना चाहिए जिससे वे अणु आयुध निर्माण कर राष्ट्र को समर्पित करते रहें। आगामी मन्त्र में हर ओर से राष्ट्र-रक्षा का सन्देश दिया गया है।

हे शत्रुहन्ता राष्ट्रनायक! तू आकाश से पड़ने वाले ओलों के समान तेजोमय आग्नेय अस्त्र शत्रुनाशक कठोर गोले (अणुबम) आदि फैंक। हे ऐश्वर्यवान! तू उत्तम शासक बनकर शत्रु और प्रजाजन दोनों को भली प्रकार नियन्त्रित कर। पूर्व पश्चिम, उत्तर-दक्षिण, नीचे-ऊपर सभी ओर से दृढ़ पोरुवाले दण्ड से पशु के समान दुष्टजनों को दण्डित कर। (ऋग्वेद मं. 7.104.19)

वेद राष्ट्र को विदेशी शत्रुओं से रक्षा करने का सन्देश तो देता ही है, वह देश के भीतर बसे शत्रुओं की और भी संकेत करते हुए, उनसे सावधान रहने और उन्हें नष्ट करने का निर्देश देता है। दोनों प्रकार के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

अग्निहोत्र द्वारा पर्यावरण सुरक्षा-एक वैज्ञानिक विश्लेषण

- ईश नारंग

पर्यावरण प्रदूषण आज की एक ज्वलंत समस्या है. पूरी मानवता इस से त्रस्त है। संसार के सभी वैज्ञानिक एकत्रित रूप से इस से जूझने का प्रयास कर रहें हैं। आधुनिक विज्ञान प्रदूषण को रोकने के लिए तो कुछ तरीके ढूंढ पाया है, किन्तु एक बार प्रदूषित वातावरण को पुन: शुद्ध करने के लिए अभी तक कोई भी उपाय खोजने में असहाय है। यदि हम भारत के अतीत की ओर देखें तो ज्ञात होता है कि हमारे वैज्ञानिक जिन्हें हम ऋषि कहते हैं, वे भी इस समस्या के प्रति सजग थे और उन्होंने हमें एक ऐसा उपाय दिया जो न केवल पर्यावरण को प्रदूषित होने से रोकता है अपितु प्रदूषित वातावरण को पुन: शुद्ध करने की क्षमता भी रखता है. वह विधि है अग्निहोत्र! हमारी प्राचीन अग्निहोत्र की परंपरा न केवल प्रदूषण को रोकती है अपितु प्रदूषित वातावरण एवं वायु को पुन: शुद्ध करने में भी पूरी तरह सक्षम है। यह प्रदूषण की रोकथाम का सबसे प्राचीन विज्ञान है। अग्निहोत्र केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं है अपितु इसमें एक महान विज्ञान छिपा है।

आजकल के युवा एवं तथाकथित सेक्युलर व्यक्ति अग्निहोत्र के विषय में अनेक गलत धारणाओं के शिकार हैं। पहली यह कि जो पदार्थ आहुति के रूप में डाला जाता है वह नष्ट हो जाता है। दूसरी यह कि समिधा आदि जलने से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड आदि बढ़ जाती है और हवा में प्रदूषण में वृद्धि होती है।

आइये देखें कि आधुनिक विज्ञान इस विषय में क्या कहता है।

1. प्रदूषण कई प्रकार के हैं. क). रासायनिक प्रदूषण यथा- कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, आदि, ख). जैविक प्रदूषण यथा : वायरस, बैक्टीरिया, आदि और ग) परमाणु विकिरण से प्रदूषण

2. विज्ञान कहता है कि कोई भी पदार्थ न तो कभी बनाया जा सकता है न नष्ट किया जा सकता है, (Matter can neither be created nor destroyed)। वेद कहता है प्रकृति आत्मा और परमात्मा अनादि हैं। आधुनिक विज्ञान अभी केवल प्रकृति (matter) को ही अनादि मानता है।

3. जब हम अग्निहोत्र की अग्नि में उपयोगी और औषधीय पदार्थों की आहुति देतें हैं तो वे नष्ट नहीं होते अपितु गैस के रूप में परिवर्तित होकर, सूक्ष्म हो कर और अग्नि की भेदक शक्ति से गतिशील होकर सुदूर स्थानों में पहुँच कर पूरे वातावरण को लाभ पहुंचाते हैं। ठोस से गैस के रूप में परिवर्तन की इस प्रक्रिया को sublimation कहते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा औषधीय पदार्थों की गुणवत्ता को कई सौ गुना बढ़ाया जा सकता है और एक के स्थान पर अनेक व्यक्तिओं को लाभ पहुंचता है। इस प्रकार घर के अंदर और बाहर पूरी वायु का शुद्धिकरण होता है।

4. इस तथ्य को अनेक वैज्ञानिक शोधों द्वारा सिद्ध किया जा चुका है। यहाँ हम शोध और विभिन्न स्थानों पर किए गए प्रयोगों के कुछ परिणामों का वर्णन दे रहे हैं-

5. कुछ समय पूर्व एक अश्वमेध यज्ञ गोरखपुर उत्तर प्रदेश में आयोजित किया गया था और उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने इस यज्ञ से पूर्व और बाद में वैज्ञानिक यंत्रों द्वारा वायु के विभिन्न प्रदूषण करने वाले कारकों की जाँच की थी। इस जांच के निष्कर्ष आश्चर्यजनक थे। वैज्ञानिकों ने हवा में सल्फर डाइऑक्साइड में 70 प्रतिशत की कमी, नाइट्रोजन ऑक्साइड में 11 प्रतिशत और यज्ञ स्थली के पास पानी में रोगाणु या बैक्टीरिया मे 66 प्रतिशत की कमी पाई। 6. इसी तरह राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ और एशियाई कृषि इतिहास फाउंडेशन द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि 60 मिनट के अग्निहोत्र से हवा में 94 प्रतिशत हानिकारक जीवाणु नष्ट हो गए। इस अग्निहोत्र में गुरुकुल कांगडी फार्मेसी हरिद्वार से प्राप्य हवन सामग्री प्रयोग की गई थी।

7. डॉ. अरविंद डी. मोंदकर (एमएससी, पीएचडी माईक्रोबायोलॉजी) ने अपने प्रयोगों में अग्निहोत्र द्वारा वायु के बैक्टीरिया में 91.4 प्रतिशत की कमी/विनाश पाया।

8. डॉ. Hafkin कहते हैं, घी और शक्कर के जलने के कई रोगों के कीटाणु नष्ट हो जातें हैं.

9. प्रोफेसर Tilward कहते हैं, घी और शक्कर के जलने से उत्पन्न होने वाले धुएं से टी. बी, खसरा, चेचक, आदि के रोगाणु नष्ट हो जाते हैं।

10. एक रूसी वैज्ञानिक डॉ. Shirowich, के अनुसार, गाय घी के जलने से उत्पन धुआं काफी हद तक परमाणु विकिरण के प्रभाव को कम कर देता है।

11. इसी तरह पोलैंड के डॉ. एल Matela Anatoninhowska ने पाया कि अग्निहोत्र की राख परमाणु प्रदूषण के प्रभाव को काफी हद तक कम करने में मदद करती है।

12. उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि अग्निहोत्र से तीनों प्रकार के प्रदूषण नष्ट होते हैं। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हमारे ऋषि वास्तव में महान वैज्ञानिक थे।

❑ वे आधुनिक विज्ञान के सिद्धांतों के बारे में जानते थे। ❑ वे जानते थे कि पदार्थ न तो बनाया जा सकता है न नष्ट किया जा सकता है, केवल उसकी दशा में परिवर्तन होता है। (प्रकृति अनादि है) ❑ जब हम किसी भी पदार्थ को अग्नि में आहूत करते हैं तो यह Sublimation क्रिया द्वारा गैस के रूप में बदल जाता है। ❑ वे पर्यावरण और हवा की शुद्धि की आवश्यकता को भी अच्छी तरह से समझते थे। ❑ वे विभिन्न औषधिओं के रोग नाशक गुणों को भी समझते थे और उन्हें पदार्थ की सूक्ष्म अवस्था में जाने पर सैकड़ों गुणा बढ़े हुए प्रभाव का भी गहरा ज्ञान था। ❑ वे अग्नि की भेदक शक्ति जिसे आज के वैज्ञानिक aerodynamic power के नाम से जानते है से भी परिचित थे जिस से sublimated पदार्थ घर के दूर और पास के कोनों में प्रसारित हो जाता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि आज के प्रदूषित वातावरण के युग में, जहाँ एक बार प्रदूषित वातावरण को पुन: शुद्ध करने की कोई अन्य विधि नहीं है, अग्निहोत्र का एक महत्व पूर्ण स्थान है। यह बात आज के बंद कमरे में रहने की जीवन शैली में और भी अधिक महत्व पूर्ण हो जाती है। हमारा अधिकांश समय आज बंद कमरों में ही बीतता है इस जीवन शैली में अग्निहोत्र जीवन की एक परम आवश्यकता बन गया है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

मैं कुर्बान हो जाऊँ। इस मुसीबत की घड़ी में मां कौरां ने ममता का वास्ता देकर इकलौती संतान को अपना धर्म बदलने के लिए कहा। तब हकीकत बोला **''भले ही जमाने की मुसीबत कितनी ही पाऊँ, मुझे धिक्कार है अपने धर्म से डगमगा जाऊँ''।**

हकीकत के पिता ने कहा कि धर्म बदलने के बाद तुम हमारी आंखो के सामने जीवित तो रहोगे। इस पर हकीकत बोला **मुझे मंजूर है मंजूर है जो हुक्म फरमाओ, मगर थोड़े से जीने के लिए मत धर्म छुड़वाओ।** इस पर मिर्जा बोला कि बेटा अपने मां-बाप की बात मान जा। अल्लाह और भगवान में कोई अंतर नहीं होता। इस पर हकीकत बोला मिर्जा साहिब आपका लाख-लाख शुक्रिया कि आपको मुझसे हमदर्दी है। परन्तु उस भगवान ने कुछ सोचकर हिन्दु (के घर जन्म दिया) ही बनाया है। धर्म के पक्के दीवाने को देखते हुए मिर्जा ने हकीकत का मुकद्मा लाहौर के सूबेदार को भेज दिया। लाहौर के सूबेदार ने सारा मामला पढ़ने के बाद कहा कि देख हकीकत तूने जो अपराध किया है उसकी सजा केवल मौत ही है। तेरी उमर और माता-पिता की फरियाद पर तुझे एक मौका दिया जा रहा है कि तू अपना धर्म छोड़कर इस्लाम कबूल कर ले। इस पर हकीकत बोला कि प्राण बचाने के लिए मैं अपना धर्म त्याग दूं ''नहीं सूबेदार साहिब मुझे अपने प्राणों से धर्म ज्यादा प्यारा है''। **धर्म की खातिर मरूं और ध र्म की खातिर जिऊं। धर्म पर बलिदान होकर स्वर्ग का अमृत पिऊं।** इस पर सूबेदार बोला कि हकीकत तुम्हारी मासूम उमर को देखकर हम क्षमा भी कर देते। लेकिन नामुनासिब बातें सुनकर तुमने अपनी मौत को खुद दावत दे दी है। सन् 1734 को बसंत के पवित्र महोत्सव पर हकीकत को वधशाला में लाया गया। वधशाला में पहुंचते ही जल्लाद ने मासूम बालक को देखकर दु:खी हृदय से हकीकत को धर्म बदलने के लिए कहा और उसके हाथ से तलवार छूटकर धरती पर गिर पड़ी, परन्तु अगले ही क्षण जल्लाद क्या देखता है कि वीर हकीकत खुद तलवार उठाकर उसे देते हुए कहता है, कि हे! जल्लाद घबराओं मत तुम अपने कर्तव्य का पालन करो। **मैं हूं कर चुका इस जहां से किनारा, रहे धर्म मेरा यह सिर है तुम्हारा।**

''मकतल में हो रहा है अब इम्तिहान मेरा,
किन्तु जुबां पे मेरे प्रभु ओ३म् नाम तेरा।''

अगले ही पल तलवार ने एक ही झटके से सिर को धड़ से अलग कर दिया और वह जो तेज धारा निकली वह आज भी प्रतिवर्ष बसंत के पवित्र पर्व पर हिन्दु जाति में अमरतत्व की भावना का संचार कर रही है और युगों युगों तक करती रहेगी। आर्य युवक सभा, शक्तिनगर, अमृतसर

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नेव।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे॥ यजु. ३६/२१,

भावार्थ-हे सकल ऐश्वर्ययुक्त समर्थ प्रभो! आप विशेष प्रकाशस्वरूप और किसी से भी न दबने वाले महातेजस्वी हो, आपको हमारा नमस्कार हो। आप शब्द करने वाले अर्थात् वेदवाणी के दाता हो, आप सदा आनन्द में रहते हो, अपने प्रेमी भक्तों को सदा आनन्द में रखते हो। आपकी जो-जो चेष्टाएं हैं, वे सबको आनन्द देने के लिए ही हैं, अतएव हम आपको बारम्बार नमस्कार करते हैं।

(पृष्ठ 5 का शेष)

शत्रु राष्ट्र के लिए बराबर कष्टप्रद होते हैं।

बहुत से कुत्ते के समान चाल चलने और दूसरे सज्जनों को पागल कुत्ते के समान बिना प्रयोजन काटने तथा अशुभ भाषण करने और गुर्रा गुर्राकर डराने वाले लोग राष्ट्र में मालिक बनकर बैठ जाना चाहते हैं। हिंसाकारी लोग ही अहिंसनीय राष्ट्रपति को भी मारना चाहते हैं। शक्तिशाली शासक क्षुद्र पुरुषों को दण्ड देने के लिए अपने शस्त्रबल को सदा तेज करता रहे। अवश्य ही वह प्रजा को पीड़ा देने वाले दुष्ट पुरुषों को दमन करने के लिए विद्युतवत् आघातकारी शस्त्र बनाए और उन पर छोड़े। (ऋग्वेद मं. 7.104.20)

वेद हमें एक और भी चेतावनी देता है कि दीर्घकाल तक अपने प्रभाव का उपयोग कर कोई शासक न रहे। जब भी वह असमर्थ हो नये व्यक्तियों के लिए पद छोड़ दे।

हे उत्तम पुरुषो! सेवा और सभा के अध्यक्ष जनो! आप लोग जरावस्था को प्राप्त निरन्तर क्षीण होने वाले पुरुष से वरण करने योग्य पदाधिकार को कवच के समान परित्याग कर दो और फिर उस स्थान पर जवान पुरुष, कार्यभार वहन करने की शक्ति से पूर्ण कान्तियुक्त जवान पुरुष को ही उस नायकत्व के पद पर नियुक्त करो जैसे बूढ़े असमर्थ आदमी से सेना में कवच ले लिया जाता है और जो उसे उठा सके, उस पुरुष को पुन: दे दिया जाता है। उसी प्रकार वरण-योग्य नेता पद भी बूढ़े से ले लिया करो और पदभार वहन करने की क्षमता वाले युवक को दे दिया करो। (ऋग्वेद मं. 5.78.5)

वेद के उपर्युक्त मन्त्र आज भी हमारे राष्ट्र की स्थिति के अनुकूल हैं और हमें राष्ट्र-रक्षा की पर्याप्त शिक्षा देते हैं। शास्त्रास्त्र, विमान और अन्यान्य वैज्ञानिक उपकरण बनाने की विधियाँ भी वेदों में हैं। भारतीय अनुसन्धानकर्त्ता पूर्ण सुविधाओं के साथ यदि इधर ध्यान दें तो अवश्य ही आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होने की आशा है। (संकलित)

आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवंडी कौटा का 2 दिवसीय कार्यक्रम

आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवंडी कौटा का 2 दिवसीय कार्यक्रम ''स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं 46वां वार्षिकउत्सव समारोह 24 दिसम्बर 2023 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य प्रवक्ता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. ओमव्रत आर्य गुरुकुल तातारपुर, हापुर, उत्तर प्रदेश व सुमधुर भजनोपदेशिका श्रीमती अल्का आर्या ग्रेटर नोएडा से पधारी थी। आचार्य ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला व श्रीमती अल्का आर्या ने महिलाओं को रक्षक्त व आत्म निर्भर होने का संदेश भजनो के माध्यम से दिया। कार्यक्रम का संयोजक श्री भैरुलाल शर्मा ने किया व अन्त में श्रीमती सुमन बाला सक्सेना, मन्त्री श्रीमती सुमनकान्ता व कोषाध्यक्ष श्रीमती नीरा सक्सेना ने सबका धन्यवाद किया।

टंकारा समाचार फरवरी 2024
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2024-26
Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-02-2024
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.01.2024

Go Confidently in the Direction of your Dreams! ...

ओ३म्

1824

चलो टंकारा
चलो टंकारा
2024

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां

जन्मोत्सव-स्मरणोत्सव

10-11-12 फरवरी, 2024

राजकोट-मोरबी हाईवे, टंकारा, गुजरात

मुख्य अतिथि

भारत की महामहिम राष्ट्रपति

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी

सोमवार, 12 फरवरी 2024

जीवन के इस ऐतिहासिक अवसर के साक्षी बनें
आप परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं

रेलगाड़ी से अपनी टिकट बुक कराएं चाहे वेटिंग लिस्ट में हो।
वेटिंग लिस्ट में हो तो 9311413920 पर वॉट्सऐप करें ताकि हम आपकी सहायता कर सकें।

आवास एवं भोजन व्यवस्था निःशुल्क उपलब्ध होगी

निवेदक
- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
- श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा
- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति
- आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक–अजय सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय